विकसित भारत @ 2047

विनोद कुमार वर्मा
पीएचडी शोध छात्र
भूगोल संजय गांधी स्मृति शास. स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी, मध्य प्रदेश

शोध निर्देशक
डॉ. के.एस. नेताम
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष संजय गांधी स्मृति शास. पीजी. महाविद्यालय सीधी, मध्य प्रदेश

सारांश (Abstract)-यह शोध पत्र 'विकसित भारत @2047' की अवधारणा पर केंद्रित है, जो भारत को स्वतंत्रता के 100वें वर्ष तक एक विकसित राष्ट्र बनाने का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। प्राचीन भारत की समृद्धि से प्रेरित होकर, वर्तमान सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे जन -धन योजना, उज्ज्वला योजना, मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और डिजिटल इंडिया के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिदृश्यों का विश्लेषण किया गया है। शोध के उद्देश्य में जलवायु परिवर्तन में भारत की भूमिका, आत्मनिर्भरता का निर्माण, आर्थिक-सामाजिक विकास, अंतरराष्ट्रीय मैत्री एवं डिजिटल प्रगति शामिल हैं। निष्कर्षतः, 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था, सतत विकास एवं युवा सशक्तिकरण के माध्यम से भारत वैश्विक शक्ति के रूप में उभरेगा। यह पत्र भौगोलिक दृष्टिकोण से विकास की चुनौतियों एवं अवसरों पर प्रकाश डालता है, जो नीति-निर्माताओं एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

बीज शब्द (Keywords)-विकसित भारत @2047, आत्मनिर्भर भारत, आर्थिक विकास, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, डिजिटल इंडिया, सामाजिक समावेशन, युवा सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, अंतरराष्ट्रीय मैत्री।

प्रस्तावना- प्राचीन भारत का शासन लोक कल्याण और लोकसमृद्धि ही भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक एव आर्थिक उन्नति के शिखर पहुंचने का मूलाधार थी।एक समय सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारतवर्ष विदेशी शासन के शोषणकारी नीतियों के कारण सामाजिक व आर्थिक रूप से विपन्नता की ओर धकेल दिया गया। 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी दासता से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भी भारत में आर्थिक व सामाजिक पिछड़ापन था। विभिन्न क्षेत्रों में भारत ने प्रगति भी की, किंतु विकसित भारत का लक्ष्य स्वतंत्रता के कई दशकों तक कोसों दूर रहा।हाल ही के वर्षों में भारत ने अपने प्राचीन स्वत्व से प्रेरणा ली और प्रगति के नवीन कीर्तिमान स्थापित करते हुवे अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा हो गया है। आज भारत के विकास की गाथाविभिन्न क्षेत्रों में अदभुद उपलब्धियों से भरी है, जिससे विकसित भारत की राह आसान बनी है। राजकोष की सुदृढ़ता से लेकर, वित्तीय समावेशन, बुनियादी ढाँचे और कृषि क्षेत्र में हो रहे भारी निवेश और 'प्रधानमत्री फसल बीमा योजना', 'कृषि सिंचाई योजना और किसान कल्याण योजनाओं से देश का सर्वांगीण विकास के वातावरण का सृजन हुआ है।जी.एस.टी. जैसी 'एक कर, एक राष्ट्र' की अवधारणा से वस्तुओ एंवं सेवाओ का राष्ट्रव्यापी बाजार पनप रहा है, उससे विनिर्माण क्षेत्र में भारत दुनिया का श्रेष्ठ राष्ट्र बनने की ओर बढ़ चला है। 08 नवंबर 2016 को भारत के विमुद्रीकरण (नोटबंदी) के ऐतिहासिक फैसले से 'आय घोषणा योजना' और भ्रष्टाचार निरोधक अनेक कानूनों से भ्रष्टाचार व कालेधन के उन्मूलन की दिशा में बड़ी पहल हुई है। विमुद्रीकरण ने डिजिटल भुगतान को प्रोत्साहित किया जिससे पारदर्शिता को बढ़ावा मिला है। स्वदेशी डिजिटल तरीके जैसे भीम एप, रुपे डेबिट कार्ड विकसित हुए हैं।'जन-धन योजना', प्रत्यक्ष लाभांतरण जैसे वित्तीय समावेश के उपायों ने विकास को समाज के अंतिम छोर तक सुलभ बना दिया है।'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'स्टैंडअप इंडिया' जैसे कार्यक्रमों ने भारत के युवाओं को भारत में रहने और भारत के साथ विकसित होने की प्रेरणा दी है। इन सारी अनूठी पहलों के पीछे है, वर्तमान भारत का कुशल नेततृव।

चलो, देखते हैं वह कौन-कौन सी योजनाएँ हैं, जिनसे भारत के विकास को गति मिली है और उसका लाभ अतिंम व्यक्ति तक पहुंचता है।'जन -धन योजना','उज्ज्वला योजना',बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना','प्रधानमत्री गरीब कल्याण योजना','नमामि गंगे श्रम','प्रधानमत्री आवास योजना', आयुषमान भारत योजना' आदि के बारे में जानते हैं जिनसे आम-जनमानस में विकास के अर्थ को समझने का सामर्थ्य बढ़ा है? महिलाओ,युवाओं,किसानों,गरीबों और हर नागरिक को लाभ पहुचाने का हर संभव प्रयास करके भारत विश्व पटल पर एक नए रूप में सक्षम और सशक्त देश के रूप में नज़र आएगा। कोविड-19 महामारी जैसी कठिन परिस्थितियों में भी, भारत सरकार ने अन्य देशों की बड़ी आबादी वाले देशों की तलुना में अद्वितीय भूमिका निभाई है। 'वंदे भारत मिशन' दुनिया में सबसे बड़ी पहलों में से एक बन गया। वर्तमान सरकार ने जन कल्याण के हित में 125 करोड़ भारतीयों को 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' के अतंर्गत आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने का सुनहरा अवसर दिया है। कोई भी देश केवल मेधावी राजनेताओ और शीर्ष प्रशासकों से नहींचलता,बल्कि लोकतंत्र की सफलता के लिए देश के प्रत्येक नागरिक की उचित सलाह और सहयोग के रूप में भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। इसकी आवश्यकता को समझते हुए, वर्तमान सरकार ने भारतीय नागरिक अपने सुझाव/विचार सोशल मीडिया, जैसे- फेसबुक, ट्विटर आदि के अलावा भारतीय वेबसाइटwww.mygov.in,www.pmindia.gov.in और www.narendramodi.in के माध्यम से भी सीधे प्रधानमत्री जी के पास भेजा जा सकता है।भारत की भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए सुदूर गाँवों आदि में भी हर नागरिक से जड़ने के लिए रेडियो उदबोधन कार्यक्रम 'मन की बात' का प्रसारण आरँभ किया। विकसित भारत @2047' मिशन की शुरुआत 11 दिसंबर 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से की थी। इसका लक्ष्य भारत को स्वतंत्रता के 100वें वर्ष, 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाना है। सरकार में पारदर्शिता वर्तमान भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि है और भारत में कई सरकारी निविदा परियोजनाओ के लिए ऑनलाइन प्रणाली की एक बेजोड़ शरुआत है।

मुख्य बिंदु:

(1) आर्थिक परिदृश्य - रोटी,कपड़ा,मकान,पूंजी,एवं प्रति व्यक्ति आय ,उर्जा, जीवन स्तर,व्यापारिका।सुरक्षा परिदृश्य - राफेल, सुखोई जैसे आधुनिक हथियार, अग्निपथ योजना।

तकनीकी परिदृश्य - चंद्रयान मिशन, मगंल मिशन।
(2)व्यावहारिक परिदृश्य- विचार ,तरीके,विधियां, ढांचा।
(3)पर्यावरणीय भौगोलिक परिदृश्य - जलवायु परिवर्तन संकट से निपटान,समग्र स्वच्छता, सततविकास हरित संपन्न,स्मार्टसिटी विकास।
(4)राजनीतिक परिदृश्य- अंतरराष्ट्रीय भाईचारा,आयात निर्यात,हस्तांतरण मित्रता,
(5)सामाजिकपरिदृश्य नारी, जाति, धर्म,भाषा,गरीबी।
(6)प्रशासनिकव्यवस्थाएं-शिक्षा,स्वास्थ्य,संचार,परिवहन, अधोसंरचना।

विकसित भारत @ 2047 के प्रमुख लक्ष्य -आर्थिकविकास:20वर्षों में30ट्रिलियनडॉलर की अर्थव्यवस्था बनना, जिसमें उद्योग, व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना शामिल है। बुनियादी ढाँचा: आधुनिक सड़कों, रेल, बंदरगाहों और स्मार्ट शहरों का विकास करना। सामाजिक कल्याण: शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आवास और सम्मानजनक जीवन स्तर में सुधार करना। युवा सशक्तिकरण: स्टार्टअप, मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ावा देना। सतत विकास: पर्यावरण संरक्षण और हरित ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करना। आत्मनिर्भरता: घरेलू संसाधनों पर निर्भरता बढ़ाना और वैश्विक शक्ति के रूप में उभरना।

शोध उद्देश्य:- किसी भी लेख,परिकल्पना का आकलन करने से पहले उसे वैज्ञानिक विधि से जांच ,क्रियान्वयन निरीक्षण की आवश्यकता होती है। इस शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित पाए गए हैं ,जो इस प्रकार है।
(1)भौगोलिक अध्ययन के दृष्टि से विश्व की जलवायु परिवर्तन में भारत की भूमिका
(2)आत्मनिर्भर भारत का निर्माण
(3) आर्थिक ,सामाजिक , विकास कार्यों पर जोर दिया जाएगा।
(4) अंतराष्ट्रीय, मैत्री, संघ,के साथ सामंजस्य स्थापित करना ।(5) वैश्विक स्तर पर भारत में डिजिटल विकास।

आर्थिक परिदृश्य - वर्तमान भारत एक विकासशील देश है। 21वीं सदी में देश अपनी क्षमताओं से आश्वस्त होकर भविष्य की ओर बढ़ रहा है। यह दुनिया की 3 री सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश 2027 तक हो जाएगा।आर्थिक विकास की दर 2023 - 24 में 8.2 प्रतिशत वृद्धि के साथ आगे बढ़ रही है।आज भी कुल जनसंख्या का 50 प्रतिशत भाग कृषि पर निर्भर है। भारत का सकल घरेलू उत्पाद 8 प्रतिशत प्रति वर्ष के हिसाब से बढ़ता है ।उम्मीद है कि 2047 में यहां के लोगों की जीवन स्तर में सुधार होगा। भारत के किसान कृषि कार्य में आधुनिक विधियों ,और तकनीकी का उपयोग करने लगे हैं। जहां प्राचीन काल में पुरानी पद्धतियों को अपनाने से फसल उत्पाद में कमी होती थी वह अब की स्थिति में वृद्धि होगा।व्यापार की दृष्टि से देखा जाए तो भारत दूसरे देशों के साथ आपसी समझौते के द्वारा दूसरे देशों को सामान भेजना और लाने का कार्य में संलग्न हो गया है। सुरक्षा के क्षेत्र में अनेक तरह के लड़ाकू विमान,युद्धपोतक जहाज, जैसे नाविक, सैन्य छावनी के द्वारा अग्निभर्ति में नए नए कुशल सैनिकों की संख्या में भी वृद्धि करने लगी है ,जिससे देश की सुरक्षा विधिवत तरीके से हो सकेगा।अंतरिक्ष की स्थिति की जानकारी ,शोधकार्य के लिए वैज्ञानिकों के माध्यम से सेटेलाइट, चंद्रयान जैसे स्पेस शटल का भी निर्माण लगातार कर रही है,जो आने वाले भविष्य में इस देश की ढांचा को मजबूत और शक्तिशाली बनाएगा जो प्रगति की राह पर देश को विकसित करेगा।

व्यावहारिक परिदृश - व्यावहारिक परिदृश्य का अर्थ उस संदर्भ से है जहाँ किसी विचार, सिद्धांत या समस्या का वास्तविक जीवन में उपयोग किया जाता है।यह विभिन्न क्षेत्रों में लागू हो सकता है,जैसे व्यावसायिक कारोबार,कंपनी या उद्योग के भीतर एक वास्तविक और गतिशील विचार प्रस्तुत करना जिससे जरूरत की वस्तुएं एवं सेवाओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि की जा सके।इसमें बाजार की स्थिति, ग्राहकों की ज़रूरतें और तकनीकी प्रगति शामिल हैं। यह व्यावसायिक निर्णय लेने और भविष्य की रणनीतियों को आकार देने के लिए महत्वपूर्ण है। यह एक दार्शनिक या नैतिक विचार है जिसका व्यावहारिक या अनुभवजन्य परिणामों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

पर्यावरणीय भौगोलिक परिदृश -सम्पूर्ण विश्व ही नहीं बल्कि भारत भी जलवायु परिवर्तन से संबंधित समस्याओं से जूझ रहा है। भारत में भूस्खलन, सूखा, बाढ़,और तापमान में वृद्धि की स्थिति देखने को मिल रहा है ।इससे निपटने के लिए वृक्षारोपण,बांध बनाना ,चेक डैम, सड़कों की देख रेख , कम CO_2 उत्सर्जित करने वाले संसाधनों का उपयोग करना,समुद्री जलस्तर में वृद्धि के लिए विभिन्न उपाय अपनाए जाते हैं।भारत जैसे विकासशील देश में वर्तमान स्थिति में समग्र स्वक्षता अभियान के तहत 2 अक्टूबर 2014 से प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्रों में सुलभ शौचालय की व्यवस्था की गई है ,इससे पर्यावरण प्रबंधन में सुविधा होगी। ग्रीन हाउस प्रभाव से संबंधित समस्याओं से निपटने के लिए आधुनिक कृषि तकनीकी का उपयोग ,वृक्षारोपण करना ,साफ सफाई,चाहे जलीय क्षेत्र हो ,या भूमि सतह तो सभी जगह जरूरी होता है ,और भारत इस सिस्टम को अपना रहा है। जैसे नमामि गंगे कार्यक्रम,अपशिष्ट निपटान, और ग्रीन स्कैनरियो,से हमारे पर्यावरण में सुधार होने की संभावना है।सतत विकास का अर्थ होता है ,संपूर्ण विकास अर्थात किसी व्यक्ति,समाज ,राष्ट्र का समुचित वृद्धि करना ,उसमें शामिल शब्द जैसे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना,लोगों की जीवन स्तर में सुधार करना, कृषि उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना,मानवीय कल्याणकारी योजनाओं को शामिल करने से मानव विकास और राष्ट्र का विकास संभव है।आज के वर्तमान युग में भारत के प्रत्येक शहरों में स्मार्टसिटी योजना का क्रियान्वयन जारी है,इससे प्रत्येक शहर की ,सफाई,लाइट विकाश, रोडलाइट,ट्रैफिक लाइट,प्रशासनिक व्यवस्थाएं जो संपूर्ण शहर वासियों के लिए प्रदान की जा रही है। इस व्यवस्था से भारत के प्रत्येक शहर में सुधार होगा ।

राजनीतिक परिदृश- भारत विभिन्न देशों के साथ आपसी भाईचारे ,मित्रता की भावना ,रख रही है जैसे व्यापार,जल बटवारा, सैनिक समझौता,बैंकिंग क्षेत्रों में भूमिका निभा रहा है। सार्क, गेट,एशियन,जी20, जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं है जो इस कदम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। एक देश दूसरे देश की मदद करते चला आ रहा है। विदेशी व्यापार के तहत दूसरे देशों का उत्पादित सामान भी अपने देश में लाया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय समझौते से प्रत्येक देश एक दूसरे के साथ अंतर्संबंध रखने लगा है।

सामाजिक परिदृश- आधुनिक युग के प्रत्येक देश में लोगों की व्यवस्था समाज पर आधारित है। समाज से परिवार ,समाज से देश ,राष्ट्र ,प्रदेश का विकास होता है। इसमें भाषा , रीतिरिवाज,सामाजिक कार्य एवं स्थिति का विकास,आर्थिक स्थिति,रहन सहन ,धर्म आदि में विकास होता है। भारत जैसे विकासशील देश में विभिन्न धर्म के लोग निवास करते है ,उनका धर्म ,कल्चर संस्कृति भले ही अलग अलग है लेकिन यहां के लोग प्रत्येक धर्म को इक्वल /सामान मानते है। कोई भी व्यक्ति किसी धर्म का अपमान/ अवहेलना नहीं करता। समाज के नारियों के लिए पर्याप्त मात्रा में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्राप्त होता है। पूर्व में ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं को शिक्षा ग्रहण कराने में भारत देश में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तब से महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ सहायता,रोजगार,नवाचार,में मदद मिलने लगा है। प्रत्येक समाज के महिलाओं के लिए पर्याप्त मात्रा में रोजगार ,शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलने लगा है। महिलाओं के लिए नारी

सशक्तिकरण,बलात्कार,ट्रैफिकिंग जैसी समस्याओं से निपटने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें अपनी अपनी योजनाओं के माध्यम से इस समस्या का समाधान करने लगी है। गरीबी समाज में पिछड़ापन का मुख्य कारण होता है ,भूमिहीन कृषक,मजदूर कृषक,और सीजनल कृषक अधिकर गरीबी की स्थिति से गुजरते है। भारत में मानसूनी वर्षा से बारिश होती है ,लगभग 68 % लोग कृषि कार्य वर्षा पर आधारित होकर करते हैं। जब किसी साल सही समय और सही रितु में बारिश हो गई तब वरदान साबित हो जाती है और जब सही समय में भी हवा होती तो अभिशाप बन जाती है। इनमें से कुछ कृषक तो हल्का फुल्का मशीनें का प्रयोग कर लेते हैं जिनका आर्थिक स्थिति कुछ सही रहता है।कुछ बिल्कुल गरीब है जो दिन का भोजन और रात का भोजन उपलब्ध भी नहीं कर पाते उनके लिए भारत सरकार के द्वारा उपभोक्ता राशन प्रदान करने वाली कार्यक्रम को विकास किया है।

प्रशासनिक व्यवस्थाएं:- भारत देश विभिन्न क्षेत्र में विकास कर रहा है ,शिक्षा , स्वास्थ,परिवहन, संचार, पर्यटन,और बैंकिंग, व्यापार आदि में विकास लगातार जारी है। वर्तमान भर डिजिटल विकास करने में लगा है ,आज के युग में नई नई मशीनों से कार्य,रोबोट, AI, शोध वैज्ञानिक लोग इसमें शामिल है। इन सभी के सहयोग से भारत तरक्की की रह पर 2047 में शामिल हो जायेगा । केंद्र सरकार से लेकर पंचायत लेवल तक विकास जारी है । आधुनिकीकरण और तकनीकी, प्रौद्योगिकी ने विकास की प्रक्रिया को और अधिक गति देने में महत्व पूर्ण भूमिका निभा रही है। वर्तमान समय में असंभव कार्य को संभव बनाने में मदद मिलने लगा है, अंडरग्राउंड टनल,पहाड़ी टनल, समुद्री इंटरनेट नेटवर्क जाल,पर्यटन विकास में पहाड़ी रोपवे ।ग्रामीण स्तर पर अधोसंरचना विकास जैसे - रोड,बिजली,तालाब,नहर, चापा ,सामाजिक वानिकी, इंदिरा आवास,प्रधानमंत्री आवास,और शहरी क्षेत्र में नल जल पेय पानी व्यवस्था,परिवहन ट्रैफिक निपटान,स्ट्रीट लाइट,मार्केट डेवलपमेंट,पार्किंग जोन, क्रीड़ा जोन, स्लम विकाश,इत्यादि। संचार क्षेत्र में प्रत्येक गांव शहर को इंटरनेट जाल से जोड़ना,फिर टीवी,रेडियो, फैक्स, तार,उपग्रह,रडार, कंप्यूटर न्यूज,समाचार पत्र , पत्रकार एवं मीडिया,सोशलमीडिया में फेसबुक,इंस्टाग्राम,ट्विटर,मैसेंजर, व्हाट्सअप, आदि ये सभी मानव जीवन की एक अभिन्न दैनिक साधन बन गए हैं। भारत में इन सभी साधनों का विस्तार तेजी से बढ़ रहा है और पूर्ण रूप से भारत डिजिटल बन रहा है। डिजिटल विकास से आशय है कि पूर्ण रूप से कैश लेश विधि, यानी प्रत्येक कार्य को तकनीकी से जोड़कर रखना जैसे, वस्तु एवं सेवाओं का लेन देन करने पर ऑनलाइन पेमेंट,ओरिजिनल डॉक्यूमेंट न रखने के बदले ,डिजिलॉकर में डॉक्यूमेंट सेव करके रखना, सभी सरकारी दस्तावेजों का रिकॉर्ड वेवपेज इंटरनेट साइट पर उपलब्ध कराना,सरकारी या निजी संस्थाओं का विवरण वेबपेज में मिलना,नवाचार/ विज्ञापन,मनोरंजन,आदि ये सभी एलिमेंट इसमें शामिल होते हैं जिससे भारत दुनिया के अन्य देशों की भांति ताल से ताल मिलकर चलने में सक्षम होने जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभिक काल से ही यह भारत देश विश्व गुरु था यहां लोग विदेशों ये पढ़ने आया करते थे, चाणक्य,कौटिल्य,मेगस्थनीज,निकोलस,जैसे हजारों विदेशी छात्र उच्च शिक्षा के लिए भारत आए थे। वे विशेष रूप से नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के लिए आते थे, जो अपनी समृद्ध शिक्षा प्रणाली के लिए प्रसिद्ध थे।प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र: नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने पूरे एशिया से छात्रों को आकर्षित किया।पढ़ाए जाने वाले विषय: ये विश्वविद्यालय न केवल बौद्ध धर्म और दर्शनशास्त्र, बल्कि चिकित्सा, खगोल विज्ञान, गणित, तर्कशास्त्र और युद्धकला जैसे विविध विषयों को भी पढ़ाते थे।आकर्षणका कारण: भारत की संपत्ति और समृद्ध संस्कृति के साथ-साथ, इन विश्वविद्यालयों की परिष्कृत शिक्षा प्रणाली विदेशी छात्रों के लिए एक बड़ा आकर्षण थी।आधुनिक शिक्षा के जनक लार्ड मैकाले ने भारतीय लोगों को अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करने की सलाह दी, उसके पहले यहां कुछ मुनि संन्यासियों द्वारा धनुर्विद्या सिखाया जाता था।

बाद में ज्योतिबाफुले,सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं के लिए शिक्षा सेवा प्रारंभ की। वर्तमान भारत में सर्वपल्ली राधाकृष्ण जी को विशेष रूप से जाना गया। योग शिक्षा में स्वामी विवेकानंद,रामदेव, पतंजलि ,राम रहीम ये सभी गुरु विश्व गुरु बने। आज का भारत तकनीकी प्रौद्योगिकी से संबंधित नवाचार से जुड़कर रोबोट टीचर भी बनाने लगी है,जिससे आने वाली पीढ़ी के लिए मशीन ही बच्चों को पढ़ा सके,अभी तक भारत के केरल में रोबोट टीचर बनाया जा चुका है।

जलवायु परिवर्तन -जिस प्रकार की जलवायु का अनुभव हम अब कर रहे है वह थोड़े बहुत उतार चढ़ाव के साथ विगत 10 हजार वर्षों से अनुभव की जा रही है। अपने प्रदर्भाव से ही पृथ्वी ने जलवायु में अनेक परिवर्तन देखे हैं। भूगर्भिक अभिलेखों से हिमयुगों और अंतर हिमयुगों में क्रमशः परिवर्तन की प्रक्रिया परिलक्षित होती है। भू आकृतिक लक्षण, विशेषतः ऊंचाइयों तथा उच्च अक्षांशो में हिमानियों के आगे बढ़ने व पीछे हटने के शेष चिन्ह प्रदर्शित करते हैं।हिमानी निर्मित झीलों में अवसादों का निक्षेपण उष्ण एवं शीत युगों के होने को उजागर करता है। वृक्षों के तनों में पाए जाने वाले वलय भी आर्द्र एवं शुष्क युगों की उपस्थिति का संकेत देते हैं।ऐतिहासिक अभिलेख भी जलवायु की अनिश्चितता का वर्णन करते हैं।ये सभी साक्ष्य इंगित करते हैं कि जलवायु परिवर्तन एक प्राकृतिक एवं सतत प्रक्रिया है।भारत में भी शुष्क एवं आर्द्र युग आते जाते रहे हैं।पुरातत्व खोजे दर्शाती हैं कि ईसा से लगभग 8000 वर्ष पूर्व राजस्थान मरुस्थल की जलवायु आर्द्र एवं शीतल थी।

निष्कर्ष (Conclusion)-'विकसित भारत @2047' भारत के लिए एक दूरदर्शी मिशन है, जो न केवल आर्थिक समृद्धि (30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था) का लक्ष्य रखता है, बल्कि सामाजिक समावेशन, पर्यावरणीय सततता एवं वैश्विक नेतृत्व को भी मजबूत करता है। इस शोध से स्पष्ट होता है कि प्राचीन स्वर्णिम विरासत से प्रेरित होकर, वर्तमान पहलें जैसे मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, नमामि गंगे एवं डिजिटल इंडिया ने विकास की गति को तेज किया है। जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में भारत की भूमिका उल्लेखनीय है, जहां वृक्षारोपण, हरित ऊर्जा एवं स्मार्ट सिटी योजनाएं सतत विकास सुनिश्चित करेंगी। युवाओं की भागीदारी, अंतरराष्ट्रीय मैत्री एवं पारदर्शी प्रशासन के माध्यम से यह लक्ष्य प्राप्त्य है। हालांकि, असमानता, गरीबी एवं पर्यावरणीय संकट जैसी बाधाओं को दर करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। अंततः, 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की भावना से भारत 2047 तक एक सशक्त, समावेशी एवं पर्यावरण-अनुकूल राष्ट्र बनेगा, जो विश्व पटल पर नई ऊंचाइयों को छुएगा। यह शोध भविष्य की नीतियों के लिए एक आधार प्रदान करता है, जहां प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी ही सफलता की कुंजी होगी।

****

संदर्भ सूची-

1. Drishti IAS. (2025). विकसित भारत@2047 के लिये परिवर्तनकारी सुधार. Retrieved from https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/transformative-reforms-for-viksit-bharat-2047
2. Press Information Bureau (PIB). (2024). 'विकसित भारत 2047 - विज़न ऑफ न्यू इंडिया 3.0' कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति के संबोधन का मूल पाठ. Government of India. Retrieved from https://www.pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2079311
3. Chegg India. (2025). विकसित भारत पर निबंध- 2047 के लक्ष्य, महत्व और भविष्य की दिशा. Retrieved from https://www.cheggindia.com/hi/viksit-bharat-par-nibandh/
4. Doordarshan News. (2023). युवाओं के लिए 'विकसित भारत @2047 पहल की शुरुआत करेंगे प्रधानमंत्री. Retrieved from https://ddnews.gov.in/युवाओं-के-लिए-विकसित-भरत-204/
5. Bhatkhande Culture University. (2024). Viksit Bharat 2047. Retrieved from https://bhatkhandeuniversity.ac.in/hi/article/viksit-bharat-2047
6. Society of Indian Educators, Allahabad. (2024). विकसित भारत @2047 [PDF]. Retrieved from https://www.sieallahabad.org/hrt-admin/book/book_file/472ad8cc374660f67ab96e9ae3538267.pdf